B.Com Part – II Semester MJC

Business Organisation and Management (1)

classmate
Date
Page

Q:- मजदूरी की परिभाषा दीजिए। मजदूरी दरों को प्रभावित करने वाले कौन-कौन से घटक है।

Ans— मजदूरी से आशय कर्मचारी द्वारा दी गयी सेवाओं के बदले मिलने वाला मौद्रिक प्रतिफल से है। यह किसी श्रमिक की वह कुल आय है जो उसे अनुबंध की शर्तों के अन्तर्गत किये गये कार्य के बदले में अपने नियोक्ता से प्राप्त होती है। यह दैनिक, साप्ताहिक या मासिक रूप में हो सकती है।

परिभाषा — मजदूरी की प्रमुख विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाएँ निम्नलिखित है —

(1) बेन्हम के अनुसार — "मजदूरी नियोक्ता द्वारा किसी अनुबंध के अन्तर्गत कर्मचारी को दिया गया वह धन है जो उसके द्वारा अर्पित की गई सेवाओं के प्रतिफल में दिया जाता है।

(2) प्रो० जीड के अनुसार — "मजदूरी शब्द का प्रयोग प्रत्येक प्रकार के श्रम की कीमत के अर्थ में नहीं करना चाहिए, वरन् उसे साहसी द्वारा भाड़े पर प्राप्त एवं नियुक्त किये गये श्रम की कीमत के लिए करना चाहिए।

(3) के०एन० वैद्य के अनुसार, "एक श्रमिक को किसी कार्य के बदले में मुद्रा के रूप में दिया जाने वाला पारिश्रमिक मजदूरी है।"

(4) अन्तर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन के अनुसार — "मजदूरी किसी श्रमिक के सेवाओं के लिए जिसे प्रति घंटा, दैनिक, साप्ताहिक या मासिक भुगतान करने के शर्तों पर नियुक्त किया गया है नियोक्ता द्वारा चुकाया गया भुगतान है।

classmate
Date
Page

मजदूरी दरों को प्रभावित करने वाले घटक
Factors Affecting Wage Rates

मजदूरी दरों को निर्धारित करने वाले निम्नलिखित घटक हैं—

(1) श्रमिकों की मांग एवं पूर्ति — Demand and Supply of Labour — अन्य वस्तुओं की भांति श्रमिकों की मांग एवं पूर्ति का मजदूरी पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि श्रमिकों की मांग उनकी पूर्ति से अधिक होगी तो मजदूरी की दरें ऊँची होंगी। इसके विपरीत यदि श्रमिकों की पूर्ति उनकी मांग की तुलना में अधिक होगी तो मजदूरी की दरें नीची होंगी।

(2) श्रम की उत्पादकता — Productivity of Labour — श्रम की उत्पादकता से आशय कुल उत्पादन में श्रम लागत के अनुपात से है। मजदूरी दरों का निर्धारण श्रमिकों की उत्पादकता के आधार पर किया जाता है। कम उत्पादकता के आधार पर कम मजदूरी दर तथा अधिक उत्पादकता के आधार पर अधिक मजदूरी दर निर्धारित की जाती है।

(3) सौदा करने की क्षमता (Bargaining Capacity — सौदा करने की क्षमता पर मजदूरी दर निर्भर करती है। श्रमिकों तथा नियोक्ताओं की अपनी-अपनी सौदा करने की क्षमता होती है। दोनों वर्गों में पक्षकारों में पारस्परिक सुदृढ़ता तथा शक्ति विशेष महत्वशील रहती है। उदाहरण के लिए एक सुदृढ़ श्रम संघ की सौदा करने की क्षमता अधिक होती है और वह इसका उपयोग मजदूरी की दरें बढ़ाने में कर सकता है।

(4) निर्वाह व्यय — Cost of Living — मजदूरी दरों का निर्धारण जीवन निर्वाह व्यय के आधार पर किया जा सकता

के मूल्यों में वृद्धि होने पर जीवन निर्वाह व्यय में भी वृद्धि हो जाती है। परिणामस्वरूप श्रमिकों की मजदूरी दर में वृद्धि की मांग करते हैं। इस कारण प्रगतिशील नियोजकों ने मजदूरी दर का गठबंधन जीवन-व्यय के साथ करना प्रारम्भ कर दिया है।

(5) सरकारी नीति एवं नियमन - Government Policy and Regulation — मजदूरी भुगतान नियमन करने के लिए विभिन्न देशों में नियमों का प्रतिपादन किया गया है। इनका उद्देश्य श्रमिकों को शोषण से बचाना है जैसे भारत में न्यूनतम मजदूरी अधिनियम तथा उचित मजदूरी अधिनियम आदि।

(6) देय क्षमता - Capacity to Pay — मजदूरी देय क्षमता समान न होकर अलग-अलग उद्योगों की अलग-अलग होती है और परिवर्तनशील है। उदाहरण के लिए कुछ उद्योग जो सुदृढ़ एवं लाभ कमाने वाले हैं ऊँची ~~म~~ मजदूरी दर देने में समर्थ होते हैं। और जिनकी वित्तीय स्थिति अच्छी नहीं होती है वे कम ही मजदूरी दे पाते हैं।

(7) प्रचलित मजदूरी दरें — Prevailing Wages Rates — स्थानीय बाजार में तथा उद्योग में प्रचलित मजदूरी की ~~दरों को~~ दरें भी इस संस्था की मजदूरी की दरों को प्रभावित करती है। इस संस्था में मजदूरी की दरों को निर्धारित करते समय न केवल स्थानीय बाजार में प्रचलित मजदूरी की दरों को ध्यान में रखता है अपितु अपने ही उद्योग के समान अन्य इकाइयों में प्रचलित मजदूरी की दरों पर भी ध्यान दिया जाता है। तदनुसार मजदूरी की दरें निर्धारित होती है।

CLASSMATE
Date
Page

(8) प्रतिस्पर्धा की अवस्था — Stage of Competition — प्रतिस्पर्धा की अवस्था भी मजदूरी की दर को प्रभावित करती है। यदि बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता है तो मजदूरी की दर अधिक होगी। इसके विपरीत अपूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में मजदूरी की दर कम होगी।

(9) उद्योग की प्रकृति — Nature of Industry — उद्योग की प्रकृति भी मजदूरी की दर को प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए पूंजी प्रधान उद्योगों में मजदूरी की दर अधिक होती है और श्रम प्रधान उद्योगों में मजदूरी की दर कम होती है।

(10) राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में उद्योग का महत्व — Importance of Industry in National Economy — देश की अर्थव्यवस्था में उद्योग का महत्व भी मजदूरी की दर को प्रभावित करता है। यदि आधारभूत उद्योग है तो उसमें मजदूरी की दर अधिक होगी और इसके विपरीत यदि सहायक उद्योग है तो मजदूरी की दर कम होगी।

x ———— x ———— x

Dr. Raj Kumar Prasad
Associate Professor
Deptt. of Commerce
Shershah College
SASARAM